

**2016**  
**भूगोल आदर्श प्रश्नपत्र**  
**प्रथम प्रश्नपत्र**

समय: तीन घण्टे 15 मिनट

पूर्णांक: 35

**निर्देश:**

- (i) प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्नपत्र पढ़ने के लिए निर्धारित है।
- (ii) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (iii) प्रश्न संख्या 1 से 5 तक बहुविकल्पीय हैं। प्रश्न संख्या 6 से 10 तक अति लघु-उत्तरीय हैं, जिनका प्रत्येक उत्तर लगभग 20 शब्दों में, प्रश्न संख्या 11 से 15 तक लघु उत्तरीय हैं, जिनका प्रत्येक उत्तर लगभग 100 शब्दों में और प्रश्न संख्या 16 से 18 तक विस्तृत उत्तरीय हैं, जिनका प्रत्येक उत्तर लगभग 300 शब्दों में दीजिए।
- (iv) सभी प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक उनके सम्मुख अंकित हैं।
- (v) आवश्यकतानुसार उपयुक्त रेखा-मानचित्रों एवं आरेखों द्वारा अपने उत्तरों की पुष्टि कीजिए।

**(बहु-विकल्पीय प्रश्न)**

निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए :

1. निम्नलिखित में से कौन सी एक परतदार अवसादी चट्टान है—  
(क) ग्रेनाइट (ख) बालू पत्थर  
(ग) संगमरमर (घ) बेसाल्ट
2. निम्नलिखित में से कौन पृथ्वी के वायुमण्डल की सबसे ऊपरी परत है—  
(क) समताप मण्डल (ख) क्षोभ मण्डल  
(ग) ताप मण्डल (घ) वाह्य मण्डल
3. महासागरीय गर्तों की संख्या निम्न में से किस महासागर में अधिक है—  
(क) आन्ध्र महासागर (ख) प्रशान्त महासागर  
(ग) हिन्द महासागर (घ) आर्कटिक महासागर
4. निम्न में से कौन सा सर्वाधिक कहवा उत्पादक देश है—  
(क) जापान (ख) आस्ट्रेलिया  
(ग) ब्राजील (घ) संयुक्त राज्य अमेरिका
5. संथाल जनजाति निवास करती है—  
(क) आन्ध्र प्रदेश में (ख) असम में  
(ग) उत्तर प्रदेश में (घ) झारखण्ड में

**(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)**

6. भूगोल की दो शाखाओं के नाम बताइये।
7. आग्नेय शैलों के कोई दो उदाहरण दीजिए।
8. तापमान की ह्रासदर से आप क्या समझते हैं ?

9. स्वेज नहर किन दो सागरों को जोड़ती है ?
10. संसाधनों के प्रकार बताइये।

**(लघु उत्तरीय प्रश्न)**

11. भूगोल का इतिहास से सम्बंध बताइये।
12. वलन तथा भ्रंशन में अन्तर बताइये।
13. महासागर के तलीय उच्चावच को एक आरेख द्वारा प्रदर्शित कीजिए।
14. वन संरक्षण को समझाइये।
15. जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम बताइये।

**(विस्तृत उत्तरीय प्रश्न)**

16. स्वेस महोदय के अनुसार पृथ्वी की आन्तरिक संरचना का वर्णन कीजिए।

**अथवा**

विश्व की मानसूनी जलवायु प्रदेश का वर्णन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत कीजिए।

(क) स्थिति एवं विस्तार (ख) कृषि (ग) मानव जीवन

17. शैलों को परिभाषित कीजिए और उनका वर्गीकरण कीजिए। अवसादी शैलों की विशेषताएं भी बताइये।

**अथवा**

उत्तरी प्रशान्त महासागर की जलधाराओं का वर्णन कीजिए।

18. नगरीय अधिवास की विशेषताएं बताइये।

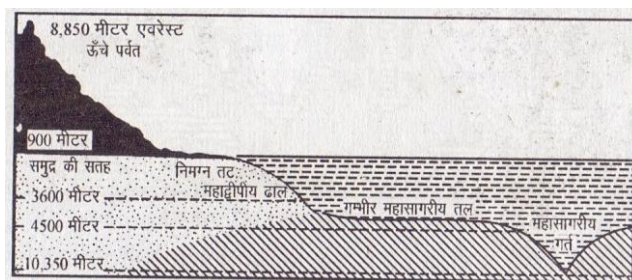
**अथवा**

विश्व में चावल के उत्पादन में सहायक भौगोलिक दशाओं का वर्णन कीजिए तथा किसी एक महादीप में उसके उत्पादक क्षेत्रों का विवरण दीजिए।

**2016**  
**भूगोल आदर्श प्रश्नपत्र**  
**प्रथम प्रश्नपत्र**

**उत्तर तालिका**

1. (ख) बालू पत्थर
2. (घ) वाह्य मण्डल
3. (ख) प्रशान्त महासागर
4. (ग) ब्राजील
5. (घ) झारखण्ड में
6. (1) भौतिक भूगोल (2) मानव भूगोल
7. (1) बेसाल्ट (2) ग्रेनाइट
8. औसत रूप से वायुमण्डल में प्रति 165 मी० की ऊंचाई पर 1 डिग्री सेल्सियस तापमान कम हो जाता है जिसे तापमान की हासदर कहते हैं।
9. स्वेज नहर लाल सागर और भूमध्य सागर को जोड़ती है।
10. सामान्यतः संसाधन दो प्रकार के होते हैं— (1) प्राकृतिक संसाधन (2) मानवीय संसाधन
11. भूगोल और इतिहास एक दूसरे से परस्पर सम्बद्ध हैं। वर्तमान में भूगोल की घटनाएं भविष्य में इतिहास बन जाती हैं। अर्थात् भूगोल की पृष्ठभूमि में जो घटनाएं जन्म लेती हैं वे ही आगे चलकर इतिहास को सुदृढ़ आधार प्रदान करती हैं। इस प्रकार बीता हुआ भूगोल ही इतिहास है। भूगोल की एक शाखा ऐतिहासिक भूगोल भी है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इतिहास और भूगोल का एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बंध है।
12. पृथ्वी की आन्तरिक शक्तियों द्वारा क्षैतिज संचलन एवं सम्पीडन के कारण शैलों में मोड़ पड़ जाते हैं इसे ही वलन कहते हैं।  
पृथ्वी की आन्तरिक शक्तियों के कारण चट्टानों में तनाव उत्पन्न हो जाता है। अत्यधिक तनाव के कारण चट्टानें टूट कर बिखर जाती हैं। इस प्रकार चट्टानों के टूटने की क्रिया को भ्रंशन कहते हैं।  
अतः वलन एवं भ्रंशन में महत्वपूर्ण अन्तर है। वलन में चट्टानों के विभिन्न प्रकार के मोड़ पड़ जाते हैं जबकि भ्रंशन में चट्टानें टूट कर स्थान परिवर्तन भी कर लेती हैं।
13. आरेख निम्नवत है।



14. वन प्रकृति द्वारा दिया हुआ निःशुल्क उपहार है। यह मानव एवं समस्त जीव जगत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मानव की तीनों मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति वन द्वारा ही होती है। वन किसी

भी राष्ट्र की अमूल्य निधि है तथा राष्ट्र के विकास का आधार है। वन राष्ट्रीय सौन्दर्य में भी वृद्धि करते हैं। पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या का समाधान भी वनों द्वारा ही संभव है। परन्तु मानव की दोषपूर्ण नीति के कारण वन क्षेत्रों में निरन्तर कमी आ रही है जिस कारण अनेक पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं जैसे-बाढ़, सूखा, भूस्खलन, प्रदूषण आदि। इन समस्याओं से निजात पाने के लिए वन संरक्षण की अति आवश्यकता है। सरकार द्वारा घोषित वन संरक्षण नीति को अपनाना चाहिए। इसके लिए जनमानस को सरकार का साथ देते हुए अधिक वृक्ष लगाने चाहिए एवं बंजर भूमि को भी हरा-भरा बनाने की आवश्यकता है।

15. जनसंख्या वृद्धि किसी भी देश के लिए अनेक समस्याएं उत्पन्न करती है-

- (1) कृषि योग्य भूमि पर जनसंख्या का भार बढ़ जाता है।
- (2) जनसंख्या की तीव्र वृद्धि से खाद्यान्न एवं आवास की समस्या उत्पन्न हो जाती है जिससे देश की जनता कुपोषण की शिकार हो जाती है।
- (3) रोजगार के अवसरों में कमी हो जाती है।
- (4) प्रति व्यक्ति आय में कमी आती है।
- (5) देश का विदेशी व्यापार असंतुलित हो जाता है जिस कारण देश की आय में भी कमी आ जाती है।

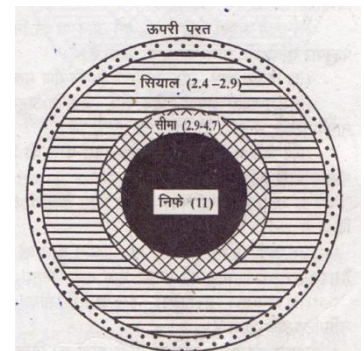
उपरोक्त समस्याओं के कारण किसी भी देश का विकास रूक जाता है।

16. स्वेस का मत है कि पृथ्वी की ऊपरी परत अवसाद द्वारा निर्मित हुई है, जिसकी गहराई तथा घनत्व कम है। इस परत में सिलिका, फेल्सपार तथा अभ्रक की अधिकता है जो रवेदार कणों से युक्त है। इस परत के नीचे पृथ्वी की संरचना को तीन भागों में बांटा गया है, जिनका विवरण निम्नवत् है-

**क. सियाल-** भूगर्भ में ऊपरी परत के नीचे जो परत पायी जाती है, उस परत में सिलिका (Si) तथा एल्युमिनियम (Al) की अधिकता है। यहां तेजाबी पदार्थों की अधिकता है। इन दोनों खनिजों पदार्थों के संयुक्तीकरण से इसे सियाल नाम दिया गया है। इस परत का औसत घनत्व 2.9 है तथा औसत गहराई 50 से 300 किमी० तक है।

**ख. सीमा-** सियाल के नीचे सीमा [Silica (Si) + Magnesium (Ma)= Sima] की परत पायी जाती है। यह परत ज्वालामुखी क्रिया को जन्म देती है। ज्वालामुखी क्रिया के लिए यहां हर पल तप्त तथा तरल लावा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहता है। मुख्यतः इस परत का निर्माण सिलिका एवं मैग्नीशियम खनिजों से हुआ है। इस परत में क्षारीय पदार्थों की अधिकता है। लोहा, कैल्शियम तथा मैग्नीशियम के सिलिकेट अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। इस परत का औसत घनत्व 2.9 से 4.7 तक है तथा गहराई 1000 किमी० से 2000 किमी० तक है। इसमें आग्नेय शैलों (बेसाल्ट) की अधिकता पायी जाती है।

**ग. निफे-** यह सीमा के नीचे अन्तिम परत है, जिसे निफे (Ni+Fe) के नाम से पुकारा जाता है। इस परत का निर्माण सघन धात्विक खनिजों (निकिल तथा फेरम) से हुआ है। पृथ्वी के आन्तरिक भाग में लौह पदार्थों की अधिकता के कारण इस परत में चुम्बकीय गुण विद्यमान हैं। इसी गुण के कारण प्रत्येक वस्तु पृथ्वी की ओर आकर्षित होती है। इसका घनत्व 11.0 तथा गहराई 6923 किमी है।



अथवा

(क) स्थिति एवं विस्तार— मानसूनी प्रदेशों का विस्तार दोनो गोलार्द्धों में 5 से 30° अक्षांशों के मध्य पाया जाता है। मानसूनी प्रदेश महाद्वीपों के पूर्वी भागों में स्थित है। इन प्रदेशों का विस्तार एशिया महाद्वीप के फिलीपाइन द्वीप समूह, हिन्द चीन, दक्षिणी चीन, थाईलैण्ड, म्यांमार,

बांग्लादेश, भारत एवं पाकिस्तान, अफ्रीका के महाद्वीप में मेडागास्कर तथा मोजाम्बिक, आस्ट्रेलिया महाद्वीप के उत्तरी भाग, दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप के केरेबियन तट, ब्राजील के पूर्वी तटीय भाग एवं उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के पश्चिमी द्वीप समूह, मध्य अमेरिका तथा मैक्सिको में है।

**(ख) कृषि**— मानसूनी प्रदेशों में उपयुक्त जलवायु एवं उपजाऊ भूमि के कारण कृषि व्यवसाय सबसे अधिक विकसित हुआ है। ये विश्व के सम्पन्न कृषि प्रदेश कहे जाते हैं। कृषि इस प्रदेश का प्रधान व्यवसाय है। यहां दो-तिहाई से भी अधिक जनसंख्या कृषि-कार्यों में लगी है। इस जलवायु प्रदेश में गेहूँ, जौ, चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, मूंगफली, सरसों, गन्ना, कपास, चाय, तम्बाकू, रबड़ आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है। दक्षिणी-पूर्वी एशिया कृषि-उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। चावल इन प्रदेशों की प्रधान कृषि उपज है। अधिकांश कृषि उत्पादन मानसूनी वर्षा पर निर्भर करता है। मानसूनी वर्षा की अनिश्चितता एवं अनियमितता कृषि उत्पादन को प्रभावित करती है। इसी कारण इन प्रदेशों में कृषि 'मानसूनी जुआ' कहलाती है। यहां पर प्रति हेक्टेयर उत्पादन विश्व के अन्य कृषि प्रदेशों की अपेक्षा कम है।

**(ग) मानव-जीवन**— कृषि, खनिज एवं उद्योग धन्धों का विकास होने के कारण मानसूनी प्रदेशों में मानव एवं उसकी संस्कृति अधिक विकसित है। विश्व की आधी से अधिक जनसंख्या (54%) इस प्रदेश में निवास करती है। मानसूनी देशों में शिक्षा एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार काफी अधिक हुआ है। उपयुक्त जलवायु, यातायात एवं संचार के साधनों के विकास के कारण यहां के निवासी आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हैं। विश्व की प्राचीन सभ्यताएं इन्हीं प्रदेशों में विकसित हुई थीं। यहां पर सभ्य जातियां निवास करती हैं।

17. सामान्य रूप से भूतल की रचना जिन पदार्थों से हुई है, उन्हें चट्टान या शैल के नाम से पुकारते हैं। चट्टानें अनेक खनिज पदार्थों एवं रासायनिक तत्वों का सम्मिश्रण होती हैं। वास्तव में भूपटल के निर्माण में सहयोग देने वाले सभी तत्व शैल या चट्टान कहलाते हैं। इनका वर्गीकरण मुख्यतः तीन प्रकार से किया गया है— (1) आग्नेय चट्टाने या शैल (2) अवसादी शैल या परतदार चट्टाने (3) कायान्तरित या रूपान्तरित चट्टाने

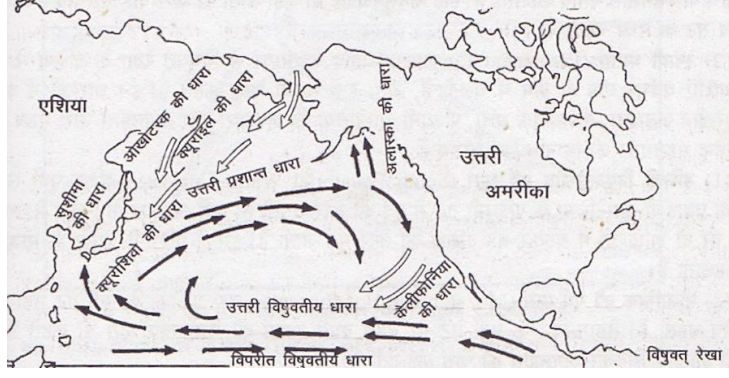
**अवसादी शैल या परतदार चट्टाने**—इनका निर्माण अवसादों के एकत्रीकरण से हुआ है। अपक्षय एवं अपरदन के विभिन्न साधनों द्वारा धरातल, झीलों, सागरों एवं महासागरों में लगातार मलबा जमा होता रहता है। यह मलबा परतों के रूप में जमा होता रहता है। इस प्रकार मलबे की परत के ऊपर परत जमा होती रहती है। अतः ऊपरी दबाव के कारण नीचे वाली परतें कुछ कठोर हो जाती हैं। यहीं परतें कठोर होकर परतदार या अवसादी शैल बन जाती हैं। इनकी निम्नलिखित विशेषताएं पायी जाती हैं—

1. अवसादी चट्टानों में जीवावशेष पाये जाते हैं।
2. ये चट्टानें कोमल तथा रवेविहीन होती हैं।
3. इनमें परते पायी जाती हैं जो स्तरों के रूप में एक-दूसरी पर समतल रूप से फैल जाती हैं।
4. सागरीय जल से बनने वाली चट्टानों में धाराओं तथा लहरों के चिन्ह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं।
5. ये चट्टानें सरन्ध्र अर्थात् प्रवेश्य होती हैं।
6. परतदार चट्टानों में जोड़ तथा संधियां पायी जाती हैं।
7. कोयला, पेट्रोल, जिप्सम, डोलोमाइट व नमक जैसे खनिज अवसादी शैलों में ही पाये जाते हैं।

## अथवा

प्रशान्त महासागर की प्राकृतिक संरचना तथा जल-तल की स्थिति में परिवर्तन के कारण इन धाराओं की दिशा एवं गति में भी परिवर्तन होता रहता है। प्रशान्त महासागर की जल धाराओं का विवरण निम्नलिखित है—

1. **उत्तरी भूमध्यरेखीय गर्म धारा—** इस जलधारा की उत्पत्ति उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका महाद्वीपों के मिलन स्थल पर पश्चिमी दिशा से होती है। यह जलधारा इस तट के पश्चिम की ओर चलकर सम्पूर्ण महासागर से होती हुई फिलीपाइन द्वीप समूह से टकराती है तथा उत्तर की ओर मुड़ जाती है। यहां पर इसकी दो शाखाएं हो जाती हैं— पहली शाखा दक्षिण की ओर मुड़कर अपनी दिशा पूर्व की ओर मोड़ लेती है जिसे प्रति-भूमध्यरेखीय धारा के नाम से पुकारते हैं। दूसरी शाखा उत्तर की ओर ताईवान द्वीप समूह पर पहुँचती है तथा यही शाखा आगे की ओर क्यूरोसिवो की धारा बन जाती है। शीत ऋतु में इसकी दक्षिणी सीमा  $5^{\circ}$  उत्तरी अक्षांश तथा ग्रीष्म ऋतु में  $10^{\circ}$  उत्तरी अक्षांश पर स्थिर रहती है।
2. **प्रति-भूमध्यरेखीय धारा—** जिस प्रकार उत्तरी तथा दक्षिणी हिन्द महासागर में प्रति-भूमध्यरेखीय धारा की स्थिति है, उसी प्रकार उत्तरी तथा दक्षिणी प्रशान्त महासागर के मध्य प्रति-भूमध्यरेखीय धारा प्रवाहित होती है। यह धारा दो कारणों से चलती है— पहला कारण पूरब से पश्चिम की ओर बहती हुई उत्तरी तथा दक्षिणी भूमध्यरेखीय धारा है। दूसरा कारण पश्चिम से पूरब की ओर प्रवाहित होने वाली व्यापारिक हवाओं द्वारा एकत्रित जल को पूरब की ओर सामान्य ढाल से प्रवाहित कराना है।
3. **क्यूरोसिवो धारा—** गर्म जल की यह धारा अपने विकास तथा गति में एक परिपक्व धारा है। इसमें अनेक धाराएं मिली हुई हैं। इसका प्रवाह क्षेत्र ताइवान द्वीप से लेकर बेरिंग जलडमरूमध्य तक है।
4. **क्यूराइल की ठण्डी जलधारा—** ठण्डे जल की यह धारा ओयाशियों के नाम से जानी जाती है। आर्कटिक महासागर से बहता हुआ जल बेरिंग सागर से प्रवाहित होकर दक्षिण की ओर जाता है।
5. **कैलीफोर्निया धारा—** ठण्डे जल की यह धारा कैलीफोर्निया खाड़ी की धारा के नाम से भी जानी जाती है। यह उत्तरी प्रशान्त महासागरीय धारा का उग्रभाग है।
6. **अलास्का की धारा—** उत्तरीय प्रशान्त महासागरीय प्रवाह की एक शाखा उत्तरी अमेरिकी पश्चिमी तट पर प्रवाहित होती हुई अलास्का की खाड़ी में चली जाती है, जिसे अलास्का की ठण्डी जलधारा के नाम से जाना जाता है।
7. **पछुवा पवन प्रवाह—** दक्षिणी प्रशान्त महासागर में पछुआ हवाओं के प्रभाव से यह धारा पश्चिम से पूरब की ओर अधिक विस्तार के साथ गरजती हुई प्रवाहित होती है, जिसे पछुवा पवन प्रवाह के नाम से जाना जाता है।



18. नगरीय अधिवास की विशेषताएं निम्नवत् हैं—

1. नगर मिश्रित मकानों अथवा इमारतों का एक समूह होता है। इसमें निम्न, मध्यम एवं उच्च आय वर्गों के निवास-स्थान, वाणिज्य क्षेत्र, कारखाने, शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, मनोरंजन, परिवहन, व्यापारिक तथा व्यावसायिक कार्य विकसित होते हैं। प्रशासनिक इकाईयां भी नगरीय व्यवस्था के प्रमुख अंग हैं।
2. नगरों में व्यावसायिक विभिन्नताएं पायी जाती हैं। इनके अधिकांश निवासी निर्माण, उद्योग, परिवहन, व्यापार-वाणिज्य, उच्च सेवाओं तथा प्रशासनिक आदि कार्यों में लगे होते हैं।
3. नगरों में संगठित मकान अधिक पाये जाते हैं। यहां अनेक मंजिल वाले भवन बनाये जाते हैं। मकानों में सोने के कमरे, बैठक, स्नानगृह, शौचालय, रसोईघर आदि सुविधाओं की पृथक व्यवस्था होती है।
4. नगरों में पक्की सड़कें तथा गलियां होती हैं। ये परिवहन मार्गों के केन्द्र होते हैं। इनमें गन्दे जल के निकास की व्यवस्था नालियों द्वारा की जाती है।
5. नगरों में रोशनी, पेयजल, स्वच्छता एवं शान्ति बनाये रखने की भी व्यवस्था होती है।
6. नगरों में व्यावसायिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक आदि विभिन्न संस्थान भी हाते हैं, जो नगरीय जीवन के आवश्यक एवं गतिशील अंग होते हैं।
7. नगरों में परिवहन, संचार एवं दूरसंचार के साधनों की भी समुचित व्यवस्था होती है।
8. अनेक नगर सुनियोजित ढंग से बसाये जाते हैं। इनमें पार्क, जल प्रदाय, धर्मशालाएं आदि सार्वजनिक स्थान भी समुचित ढंग से बनाये जाते हैं।
9. नगरों में सामाजिक-सांस्कृतिक सेवाओं में विद्यालय, अस्पताल, सामुदायिक विकास केन्द्र, खेल के मैदान, पार्क, क्लब, सिनेमागृह आदि भी पाये जाते हैं।

### अथवा

विश्व में गेहूँ के बाद खाद्यान्नों में चावल प्रमुख स्थान रखता है। जनाधिक्य वाले दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देशों में चावल ही जीवन-यापन का आधार है। एशिया को ही चावल की जन्मभूमि होने का सौभाग्य प्राप्त है। चावल जो कि धान की सफाई से प्राप्त होने वाला खाद्यान्न है। यह मानसूनी एवं उष्ण कटिबन्धीय आर्द्र-जलवायु का पौधा है। मुख्य रूप से इसकी खेती कर्क एवं मकर रेखाओं के मध्य की जाती है। इसकी खेती के लिए उष्णार्द्र जलवायु महत्वपूर्ण होती है। मानसूनी जलवायु सबसे उपयुक्त रहती है।



(1) **तापमान**— इसकी खेती के लिए अधिक तापमान की आवश्यकता होती है। बोते समय  $18^{\circ}$  से  $20^{\circ}$  सेग्रे<sup>0</sup>, बढ़ते समय  $24^{\circ}$  सेग्रे<sup>0</sup> तथा पकते समय  $27^{\circ}$  सेग्रे<sup>0</sup> तापमान एवं तेज धूप आवश्यक होती है।

(2) **मिट्टी**— चावल की खेती के लिए उपजाऊ चिकनी मिट्टी आवश्यक होती है। डेल्टाई एवं बाढ़ द्वारा निर्मित कॉप मिट्टी, जिसमें नमी धारण करने की क्षमता अधिक होती है, इसकी खेती के लिए सर्वश्रेष्ठ होती है। पहाड़ी क्षेत्रों में सीढ़ीदार खेत बनाकर इसकी खेती की जाती है।

(3) **मानवीय श्रम**— इसकी खेती के लिए सस्ते एवं अधिक संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि जल से भरे खेतों में मशीनों से पौधों की रोपाई आदि का कार्य संभव नहीं हो पाता है। यही कारण है कि चावल का उत्पादन सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में किया जाता है।